IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 8, Issue 1, August 2020
Impact Factor: 4.819

# नारी कौशल और आत्मनिर्भरता: एक विश्लेषण

**डॉ० कीर्ति शुक्ला**

**असिस्टेंट प्रोफेसर- संस्कृत**

**राजकीय महाविद्यालय, मानिकपुर, जनपद- चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)**

विकसित भारत की कल्पना एक दृष्टिकोण नहीं बल्कि प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति से साकार होती एक वास्तविकता है ।यह उस भारत की बात है जहां कोई पीछे न छूट जाए,जहां आर्थिक विकास समावेशी हो और सभी के लिए अवसर उपलब्ध हो ।उद्यमिता एक मनोवैज्ञानिक क्रिया है इसी कारण यह सृजनात्मक एवं नवाचार का स्रोत मानी जाती है ।उद्यमी व्यक्ति में अनेक प्रवृत्तियां सम्मिलित होती हैं जो अनेक अभिवृत्तियों मानसिक झुकावों पूर्व प्रवृत्तियों व भावनाओं से संचालित होती हैं ।अतः उद्यमीय क्रियाएं प्रारंभिक मानसिक पृष्ठभूमि का ही परिणाम है ,जो व्यक्ति उद्यमी नव- प्रवर्तनों स्वातन्त्रय होगा एवं संप्रभुता श्रेष्ठ कार्यान्वयन व श्रम के प्रति आदर की भावनाओं को महत्व देते हैं उनमें स्वतः ही सर्वनिष्ठा अभिवृत्तियों का विकास हो जाता है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि उद्यमी के विकास में उद्यमी व्यक्तित्व की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा समाप्ति के पश्चात जीविका के दो ही विकल्प होते हैं ---

1) सरकारी सार्वजनिक या निजी क्षेत्र में निर्धारित वेतन पर नौकरी का

2) स्वरोजगार -जिसमें व्यक्ति नए विचारों को ग्रहण करता है उनका परिवर्तन करता है एवं उत्पादन सेवा का कार्य करता है ।ऐसे लोग उद्यमी कहे जाते हैं ।प्रथम विकल्प में संभावनाएं सीमित होती हैं जबकि दूसरे विकल्प के अंतर्गत उपभोक्ता, उत्पादन व आयात के विकल्प तैयार कर ,निर्यात कर, राष्ट्र के कुल उत्पादन में स्वयं उपार्जन से वृद्धि किया जाता है। स्वरोजगार द्वारा उत्पन्न रोजगार के अवसरों में कार्यालयों के वेतन भोगी एवं वृहद औद्योगिक प्रतिष्ठानों के रोजगार

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 8, Issue 1, August 2020
Impact Factor: 4.819

अवसरों की अपेक्षा कम पूंजी का निवेश होता है ।उद्यम मध्यवर्गीय व्यक्तियों को छोटी बचत का निवेश उद्यमीय कार्यों में करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वे लोगों की रचनात्मक शक्ति को उत्पादन ,डिजाइन, निपुणता प्राप्त करने के माध्यम से समाहित कर दिशा प्रदान करते हैं।उद्यमिता, उत्कृष्टता से आर्थिक प्रगति, गरीबी ,रोजगार उन्मूलन ,रोजगार सृजन, नवाचार और समावेशी विकास को बल मिलता है ।